ईश्वरीय
खजाना
टीम
Presents

विशेष पुरुषार्थ

तीव्रता से आगे बढ़ने की श्रेष्ठ युक्तियां

यह श्रेष्ठ पुरुषार्थ की
भिन्न भिन्न युक्तियाँ
बाबा की रोज
जैसे मीठी थपकी है
अन्तर्मन में
जो समा ले इसे
जीवन में उसकी सफलता
शत प्रतिशत पक्की है...

माया-मुक्त ब्राह्मण जीवन के लिए

परमात्म इशारे

जहाँ acceptance है, वहाँ सुख है,
और भीतर भी शांति है।
परन्तु अगर acceptance नहीं है,
तो फिर शिवबाबा की श्रीमत की पालना ही नहीं है ...
तब ना तो वहाँ सुख है, ना शांति है और
ना ही तब भीतर हल्कापन हो सकता है।

Peace of Mind
CH. 1221 d2h
CH. 1087 dishtv
CH. 1065 TATA PLAY
CH. 678 airtel digital TV
CH. 496 SUN DIRECT

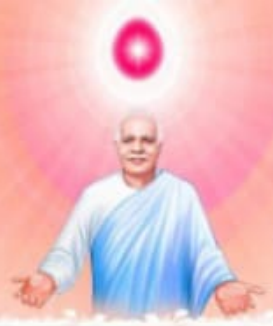

अव्यक्त शिक्षाएँ

क्रोध को भी जीत लिया है लेकिन किसी आत्मा के कोई संस्कार देखते हुए स्वयं अन्दर ज्ञान स्वरूप से नीचे आ जाते और उसी आत्मा से किनारा करने का प्रयत्न करते, क्योंकि उसको देख उसके सम्पर्क में रहते अवस्था नीचे ऊपर होती है इसलिए स्वभाव को देख किनारा करना, यह भी घृणा अर्थात् क्रोध काही अंश है। जैसे क्रोध अग्नि से जलने के कारण दूर रहते हैं, तो यह सूक्ष्म घृणा भी क्रोध के अग्नि समान, किनारा करा देती है। इसका रायल शब्द है अपनी अवस्था को खराब करें इससे किनारा करना अच्छा है। न्यारा बनना और चीज़ है, किनारा करना और चीज है। प्यारे बन न्यारे बनते हो, वह राइट है। लेकिन सूक्ष्म घृणा भाव - "यह ऐसा है, यह तो बदलना ही नहीं है।" ऐसे सदा के लिए उसको सूक्ष्म में श्रापित करते हो। सेफ रहो लेकिन उसको सर्टीफिकेट फाइनल नहीं दो। यह घृणा भाव अर्थात् गिराना। दूसरे को गिरा करके अपने को बचाना यह ब्राह्मणों की विशेषता नहीं। खुद को भी बचाओ, दूसरे को भी बचाओ। इसको कहा जाता है - विशेष बनना और विशेषता देखना।

अ.बापदादा-22.01.82

दुनिया वाले कहते हैं - हाथ खाली आये, हाथ खाली जायेंगे। लेकिन आप कहते हो - हम भाग्यविधाता के बच्चे भरकर जायेंगे, खाली नहीं जायेंगे।

Avyakt Murli - 7-3-1993

/AvyaktMurliEssence

"सम्पर्क और सेवा दोनों में सफल बनने के लिए.."

सफलता तभी मिलेगी जबकि सदैव स्वयं को मोल्ड करने की क्वालिफिकेशन होगी। अगर स्वयं को मोल्ड नहीं कर सकते तो गोल्डन एज की स्टेज तक पहुँच न सकेंगे। जैसा समय जैसे सरकमस्टन्सिज (Circumstance) हों उसी प्रमाण अपनी धारणाओं को प्रत्यक्ष करने के लिए मोल्ड होना पड़े। मोल्ड होने वाले ही रीयल गोल्ड हैं। अगर मोल्ड नहीं होते तो रीयल गोल्ड नहीं हैं। जैसे साकार बाप की विशेषता देखी - जैसा समय, जैसा व्यक्ति, वैसा रूप। तो सदा सफलतामूर्त्त के लिए विशेष यह क्वालिफिकेशन चाहिए।

Avyakt Murli - 19-11-79

अमृतवेला

संगमयुगी ब्राह्मणों के मुख से `मेहनत' है वा `मुश्किल है' - यह शब्द मुख से क्या लेकिन संकल्प में भी नहीं आ सकता। तो इस वर्ष का विशेष अटेन्शन `सदा सहज योगी'।** जैसे बाप को बच्चों पर रहम आता है वैसे स्वयं पर भी रहम करो और सर्व प्रति भी रहमदिल बनो। टाइटल `रहमदिल' का तो आप सबका भी है ना? अपना टाइटल याद है ना? लेकिन रहमदिल बनने के बदले एक छोटी-सी गलती करते हो। रहम भाव के बजाए अहम भाव में आ जाते हो। तो रहम भूल जाते हो। कोई अहम भाव में आ जाते हैं। कोई वहम भाव में आ जाते हैं। पता नहीं, पहुँच सकेंगे कि नहीं पहुँच सकेंगे? यथार्थ मार्ग है या नहीं है - ऐसे अनेक प्रकार के स्वयं के प्रति वहम भाव और कभी-कभी नॉलेज के प्रति वहम भाव। इसलिए रहम का भाव बदल जाता है। समझा? दिलशिकस्त नहीं बनो लेकिन सदा दिलतख्तनशीन बनो। **तो समझा इस वर्ष में क्या करना है? इस वर्ष का होमवर्क दे रहे हैं।सहजयोगी बनो। रहमदिल बनो और दिलतख्तनशीन बनो'। तो सदा भाग्य-विधाता बाप ऐसे आज्ञाकारी बच्चों को अमृतवेले रोज़ सफलता का तिलक लगाते रहेंगे। यह भी तिलक का गायन है ना कि भक्तों को भगवान तिलक लगाने आया तो इस वर्ष आज्ञाकारी बच्चों को स्वयं बाप आपके सेवास्थान अर्थात् तीर्थ स्थान पर सफलता का तिलक देने आयेंगे। बाप तो रोज़ चक्र लगाने आते ही हैं। अगर बच्चे सोये हुए हों, वह उनकी गफ़लत है।

The words ' hard work ' or ' difficult ' not only in the mouth bue cannot even enter in thoughts of confluence aged Brahmins. So this year's special attention is ' Sada Sahaj Yogi ' . Just as the Father has mercy on the children, in the same way, have mercy on yourself and be merciful to everyone. All of you also have the title of ' merciful ' , don't you ? Do you remember your title ? But instead of being merciful, you make small mistakes. Instead of being compassionate, you become egoistic. So you forget mercy. Don't know , will you be able to reach or not ?Whether it is the right path or not, there are many types of illusions towards self and sometimes illusions towards knowledge. That's why the feeling of mercy changes. Got it ? Do not become disheartened, but always remain seated on the heart-throne. **So, have you understood what to do in this year ? Giving homework for this year. ` Be an easy yogi. Be merciful and be seated on the heart - throne . So the Father, the Bestower of Fortune, will always apply the tilak of success to such obedient children every day at Amrit vela. This is also the praise of Tilak, isn't it that when God came to apply Tilak to the devotees, this year the Father Himself will come to your place of service, that is, the place of pilgrimage, to give the obedient children the Tilak of success. The Father comes everyday to spin the wheel. If the children are asleep , it is their fault.**

Avyakt Vani - 06.02.1980

कहते हैं "खाली हाथ आये थे, खाली हाथ जाएंगे"

सच तो यह है, सब कुछ जो दिखता है –
शरीर, रिश्ते, धन–संपत्ति, नाम, औधा ...
ना लेकर आये थे, ना लेकर जाएंगे।

संस्कार और कर्म, जो दिखते नहीं हैं,
साथ लेकर आये थे और साथ लेकर जायेंगे।

जो साथ नहीं जाएगा,
उसके लिए इतनी मेहनत करते हैं,
जो साथ जाएगा उनका भी ध्यान रख लें ...

B.K. SHIVANI

The medicine for overcoming anger is,

'Hear no evil
see no evil
speak no evil
and
think no evil'

Then your face will sparkle like an angel.

- Dadi Janki

www.dadijanki.org

Brahma Kumaris Websites

Main BK website www.shivbabas.org OR www.brahmakumari.org (by SBS team)

Int'l website: www.brahmakumaris.org

India website: www.brahmakumaris.com

BK Sustenance website: www.bksustenance.net

All Data hosted on www.bkdrluhar.com

Murli Websites: babamurli.net and madhubanmurli.org

www.omshantimusic.net

www.bkgoogle.org

www.bksewa.org

www.bkinfo.in

www.bk.ooo

www.brahmakumari.org/centres

NEW www.IshvariyaKhajana.BKhq.org